साहित्य अकादमी के आयोजन के दूसरे दिन वक्ताओं ने की चर्चा

बाल साहित्य की समस्याओं और समाधान पर मंथन

साहित्य अकादमी

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता। साहित्य अकादमी दिल्ली के दो दिवसीय आयोजन के दूसरे दिन हिंदी संस्थान के निराला सभागार में लेखक सम्मेलन में संगोष्ठी, काव्य समारोह के संग पुरस्कृत लेखकों ने अनुभव साझा किये। बाल साहित्य में चुनौतियों और समस्याओं के साथ ही सुधार पर मंथन किया।

बाल साहित्य काव्य समारोह भी हुआ। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने अध्यक्षता की। माधव कौशिक ने कहा कि जब समाज में विघटन होता है तो उस खालीपन को भरने की जिम्मेदारी साहित्य निभाता है। बच्चों के लिए रचते समय दृश्य, श्रव्य और पुस्तक माध्यम में लेखक को अलग-अलग टूल्स इस्तेमाल करने होंगे। लखनऊ के सुरेंद्र विक्रम ने बाल हिन्दी रचना- पापा कहते बनो डाक्टर, मां कहती इंजीनियर.. में बच्चों पर थोपी बातों संग बाल मन पर चर्चा की। जाकिर अली रजनीश ने कहा कि हिन्दी बाल साहित्य अब भी उपदेशों, नीति कथाओं में उलझा है।

हिंदी संस्थान में शुक्रवार को साहित्य अकादमी के आयोजन में विचार रखते वक्ता।

पुरस्कृत लेखक बोले

- असमिया लेखक रंजू हाजरिका ने कहा कि बाल साहित्य पूरी दुनिया में एक सा है और उसका आधार वाचिक साहित्य है।
- बांग्ला के लिए पुरस्कृत दीपान्विता राय ने कहा कि मैंने अपने बाल साहित्य को परी कथाओं से दूर रखकर वर्तमान से जोड़ने का प्रयास किया है।
- डोगरी के लिए बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त बिशन सिंह दर्दी ने कहा कि मेरी पुरस्कृत पुस्तक कुक्कड़ू कड़ू का मतलब बच्चों को डोगरी के प्रति जागृत करना है।
- गुजराती लेखिका गिरा पिनाकिन भट्ट ने कहा कि मेरी पुरस्कृत पुस्तक 'हंसती हवेली' में किशोर बच्चों की चहक, इस उम्र के तेवर को सजीव किया है।
- कन्नड लेखक कृष्णमूर्ति ने बच्चों को स्वतंत्रता देना जरूरी बताया।
- कोंकणी के लिए सम्मानित हर्षा सदगुरु शेट्ये ने कहा कि मेरी पुस्तक की मुख्य पात्र मैं ही हूं।
- मराठी लेखक भारत सासणे ने कहा कि किशोर मन को ध्यान में रखते हुए समशेर कुलपघरे का प्रतिनिधि चरित्र तैयार किया।
- राजस्थानी लेखक प्रहलाद सिंह झोरड़ा ने कहा कि बच्चों के मनोविज्ञान पर आधारित बाल साहित्य सृजन चुनौती है।